[श्री मीर्जा इर्शाद बेग]

अविलम्ब भुगतान किया जाय यह मैं आपके द्वारा केंद्र सरकार से मांग करता हूं। मान्यवर, मैं रायल्टी की नयी नीति घोषित करने के लिये भी आपके माध्यम से मांग करता हूं। मान्यवर, गुजरात में कोयला 1 हजार किलोमीटर दूर से आता है और अगर आप आंकड़े देखें तो आप को पता लगेगा कि प्रति टन वाहन का जो खर्चा है वह 361 रुपये से अधिक होता है। डी कक्षा का जो कोयला है, उसके दाम प्रति टन 279 रुपये हैं। यानी कि वहां कोयला प्रति टन 640 रुपये से भी अधिक पड़ता है। लेकिन, मान्यवर, गैस के संबंध में ऐसा नहीं है। गैस के संबंध में सरकार की विपरीत नीति है। जहां वह पैदा होती है उस इलाके को उसका कोई लाभ नहीं है। मान्यवर, एच.बी.जे. पाइप लाइन से गैस प्राप्त कर्ताओं को ओब्सोर गैस वन का खर्चा देना पड़ता है। तो मान्यवर, यह विषमता है। इस विषमता को दूर करने के लिये मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करता हूं। इससे राज्यों के विकास पर उसका विपरीत असर होता है। मान्यवर, इस संबंध में आगे मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

अंत में मैं मंत्री जी से यह कहना चाहूंगा कि एक अच्छा बजट पेश करके आपने लोगों की भावनाओं को छुआ है। लेकिन आप देखें, इस समय टैक्सटाइल मंत्री भी मौजूद हैं, उन्हें टैक्सटाइल नीति के संबंध में विशेष रूप से सोचना पड़ेगा। जिस ढंग से हमारी मिलें बंद हुई हैं उसको देखने के जरूरत है। अगर ये घाटे पर घाटा करती चली जायेंगी तो

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : समझ गये वे।

श्री मीर्जा इर्शादबेग : वित्त मंत्री जी से मैं निवेदन करूंगा। मान्यवर, आप समझते हैं लेकिन मंत्री महोदय और उनका अधिकारी वर्ग नहीं समझता है।

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : उनका भाव मैं देख रहा हूं कि वे समझ रहे हैं।

श्री मीर्जा इर्शादबेग : समझ रहे हैं तो इसको करें, इसको दुरुस्त करें।

मैं मंत्री महोदय को हार्दिक बधाई देता हूं और मैं आशा करता हूं कि आने वाले दिनों में हमारी वित्तीय प्रणाली इस ढंग से चलेगी जिससे देश उन्नति की दिशा में आगे बढ़ेगा और लोगों ने जो विश्वास राजीव गांधी पर रखा है, कांग्रेस सरकार पर रखा है उस विश्वास का वे पुनर्चारण करेंगे। मैं पुनः आशा करता हूं कि आने वाले दिनों में देश इन आर्थिक नीतियों के साथ सक्षम होकर आगे कदम बढ़ायेगा। मान्यवर, आपने जो मुझे बोलने के लिये समय दिया उसके लिये मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं।

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : डा० हाशिम किदवई।

डा० एस०हाशिम किदवई (उत्तर प्रदेश) : जनाबे वाइस चेयरमैन साहब, इस साल के बजट का मैं तहे दिल से खैरमकदम और उसकी ताईद करने के लिये खड़ा हुआ हूं। इसके साथ ही जनाबे फाइनेंस मिनिस्टर साहब को इतना अच्छा बजट पेश करने के लिए मुबारकबाद पेश करता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Dr. Kidwai, you can continue after lunch. The House is now adjourned for lunch and we will meet again at 2.30 P.M.

The House then adjourned for lunch at thirty minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-five minutes past two of the clock, **The Deputy Chairman** in the Chair.

SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANTS (GENERAL) 1988-89, MARCH, 1989)

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF EXPENDITURE IN THE MINISTRY OF FIN-

ANCE (SHRI B. K. GADHVI): Madam, I lay on the Table a statement (in English and Hindi) showing the Supplementary Demands for Grants (General) for the year 1988-89 (March 1989). (Placed in Library. See No. LT 7557/89].

THE BUDGET (GENERAL) 1989-90—Contd.

डॉ० एम० हाशिम किदवई : यह बजट हमारी हुकुमत की पालिसियों का आइनादार है और इससे साफ जाहिर होता है कि हमारी हुकुमत मुल्क से गरीबी का खात्मा करने के लिए, मुल्क को खुशहाल बनाने के लिए और इसे माशी तौर से मजबूत और मुस्तहकम बनाने के लिए और तमाम हिंदुस्तानियों का मयारे जिंदगी ऊंचा करने के लिए और मुल्क को बीमारी जेहालत, बेरोजगारी से निजात दिलाने के लिए क्या क्या करना चाहती है और नैशनल इकनामी को मुस्तहकम मजबूत बनाना चाहती है और यह चाहती है कि मुल्क जल्द से जल्द अपनी मंजिले मकसूद तक पहुंच जाये यानी हमारे मुल्क में सोशलिज्म जल्दी कायम हो जाये और जिसमें अमीर और गरीब और ऊंच नीच की तफरीक न रहे और मुल्क से गरीबी का खात्मा हो जाये। इसके हुसूल के लिए आजाद सोशलिस्ट गैरमजहबी, जम्हूरी हिंदुस्तान के मैमारे आजम और कौमी रहनुमा पंडित जवाहर लाल नेहरू ने मुल्क को माशी ऐतबार से मजबूत और मुस्तहकम बनाने के लिए, इसलिए बगैर माशी इस्तहकाम के आज की दुनिया में किसी मुल्क की आजादी बरकरार नहीं रह सकती, जम्हूरी मंसूबे बंदी का आगाज किया और इसके जरिये से यह कोशिश की कि मुल्क को माशी तौर से मजबूत और खुद मकतवी बनाया जाये और उसके जबर्दस्त कुदरती वसीलों का पूरी तरह से एक्प्लायटेशन किया जाये और उससे पूरी तरह से फायदा उठाया जाये और यह मंसूबाबंदी या प्लानिंग का आगाज हुआ और इससे हमारा मुल्क इस वक्त इंडस्ट्रियलाइजेशन में जबर्दस्त तरक्की कर रहा है। जिस मुल्क में सुई तक नहीं बनती थी उसमें आज स्टील के देखकामत प्लैन, प्लांट और बेशुमार और लातादाद कारखानें मुल्क के अतराफो किनान में लगे हुए हैं। नयी नयी इंडस्ट्रीज लग रही है और सनती और जरई पैदावार में जबर्दस्त इजाफा हो रहा है। गरज कि हमारा मुल्क तरक्की की मंजिले बड़ी तेजी से तय कर रहा है और इसकी वजह से हमारी नेशनल इकनामी में जबर्दस्त इस्तहकाम पैदा हुआ है। जो चीजें कम्युनिस्ट मुल्कों में गैर जम्हूरी तरीकों से और जबर्दस्त जोर व खन से हासिल होती वे हमारे मुल्क में पुरअमन और जम्हूरी तरीकों से हासिल हुई हैं। आज हमारे लिए बड़े फख्र और खुशी की बात है कि मुल्क की कौमी आमदनी और नेशनल ग्रोथ में जबर्दस्त इजाफा हुआ है। पंडित जी के बाद इंदिरा जी और अब हमारे महबूब वजीरे आजम राजीव गांधी जी की जातेगिरामी पर यह शेर पूरी तरह से सादिक आता है :

"निगह बलन्द सुखन दिल नवाज, जांपुरसोज
यही है रस्मे सफर मीरे कारवां के लिए।"

इन्हीं पालिसियों पर गामजन है और इसकी बदौलत आज हमारा मुल्क दुनियां की सबसे बड़ी पालियामेंट्री जम्हूरियत है और वह सारी दुनियां में एक नुमाया पोजीशन हासिल कर रहा है, बल्कि इसकी कयादत में तीसरी दुनियां में हर किस्म के एक्स्प्लायटेशन और महकूमी के खिलाफ सरगर्म अमल है और दुनियां की नयी पुरानी सामाजी ताकतो से छुटकारा हासिल करने की जद्दोजहद में मसरूफे कार हैं। हमारे मुल्क को इस वक्त भी बेशुमार और अनगिनत नित नये मसलों का सामना करना पड़ रहा है। उसमें बीमारी है बेरोजगारी है, गरीबी है, जिहालत है और सबसे बढ़कर मुल्क को तबाही की तरफ लेजाने वाली फिरकेवाराना ताससुब और तंगनजरी है और मुल्क की आजादी और इसका इत्तहाद तभी बरकरार रह सकता है जब अपने मुल्क से कम्युनलिज्म और ताससुब का खात्मा कर दे। इसी मजमून को एक शायर ने इस तरह अदा किया है :